International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 15-05-2021, Accepted: 30-05-2021, Published: 16-06-2021
Volume 7, Issue 3, 2021, Page No. 93-97

संत कबीरदास (भक्तिकालीन) एवं संत मगनीराम (रीतिकालीन) की साखियों में भक्ति-भावना

शतदल मंजरी
शोध छात्रा, तिलकामांझी भागलपुर, विश्वविद्यालय भागलपुर, बिहार, भारत

सारांश
हिन्दी साहित्येतिहास में युग को कवि का निर्माता माना गया है। अंग्रेजी के सुप्रसिद्ध कवि एवं आलोचक मैथ्यू ऑर्नल्ड ने कहा है कि "कवि और युग परस्पर प्रतिक्रियावादी होते हैं।"(१) युग की परिस्थितियों एवं आवश्यकताओं के अनुरूप ही कवि का आविर्भाव होता है। कवि कुछ युग से सीखता है और कुछ *युग* उन्हें सिखाता है। युग परिस्थितियाँ एवं आवश्यकताएँ जैसी भी हो परंतु मानसिक वृत्तियाँ देश और काल के बंधनों से दूर रहकर समान बनी रहती है। उनमें जो विषमताएँ मिलती है वे देश और काल के कारण होती है।
भारतीय धर्म-साधना के इतिहास में भक्तिकालीन कवि कबीरदास ऐसे ही महान~ विचारक एवं प्रतिभाशाली कवि हैं जिन्होंने शताब्दियों की सीमा का उल्लंघन कर दीर्घकाल तक भारतीय जनता का पथ आलोकित किया और सच्चे अर्थों में जन-जीवन का नायकत्व किया। महात्मा कबीर के समय में भारतवर्ष राजनीतिक] सामाजिक] धार्मिक और आर्थिक रुप से सर्वत्र एक अशांति और अव्यवस्था का साम्राज्य होने के बावजूद उन्होंने भारतीय समाज में दोनों धर्मों के बीच पारस्परिक सौहार्द्र को बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। इसी प्रकार संत मगनीराम भी कबीर के अनुकूल रीतिकालीन प्रथम चरण के महत्त्वपूर्ण कवि रहे हैं। दुर्भाग्य से ये हिन्दी साहित्येतिहास के छूटे एवं भूले-बिसरे तथा अज्ञात एवं अप्रकाशित कवियों में से एक हैं] जिनकी पांडुलिपियों का प्रकाशन आज के वयोवृद्ध साहित्यकार डॉ. अवधेश्वर अरुण जी के प्रयास से २००९ ई०.में हुआ है जो वज्जिका भाषा में रचित है। इनकी रचित साखियों की संख्या १४२३ है, जिनपर कबीर की स्पष्ट झलक दिखलाई पड़ती है। इसलिए संत मगनीराम के साहित्य में भी कबीर की तरह सगुण और निर्गुण ईश्वर से संबंधित अनेक बातों का उल्लेख मिलता है। जहाँ एक ओर वे राम] कृष्ण हरि इत्यादि की वैष्णव भक्ति करते हैं और उनकी शरणागत होने की भी बात करते हैं वहीं दूसरी ओर अनेक स्थान पर उन्होंने निर्गुण के प्रति आग्रह व्यक्त किया है। यथा ---
**आदि-अंत औ मध्य है सरगुन सत्य जुगादि।
निर्गुण रहित त्रिकाल है मगनीराम अनादि।।"(२)
मगनीराम की दृष्टि सगुण और निर्गुण को लेकर समन्वय की रही है इसलिए एक जगह वे सगुण और निर्गुण को दो आँखों की भाँति पूरक मानकर कहते हैं ---
**सर्गुण निर्गुण दोई है कहने को ज्यों आँखि।
देखे एक ठौर वे मगनीराम साखी ।।" (३)
इस प्रकार] अलग-अलग काल से प्रभावित संत कबीर दास और संत मगनीराम की भक्ति भावना का दर्शन अलग-अलग रूपों में किया जा सकता हैA

मूल शब्दः संत कबीरदास (भक्ति कालीन) एवं संत मगनीराम (रीति कालीन), भ्क्ति-भावना, सगुण, निर्गुण, राम, ब्रह्म।

प्रस्तावना

भक्तिकालीन कवि संत कबीर एवं रीतिकालीन कवि संत मगनीराम की भक्ति-भावना का विवेचन निम्न शीर्षकों के अंतर्गत किया जा सकता हैः

१) नाम स्मरणः कबीर दास ने अपने काव्य (साखियों एवं पदों) में प्रभु नाम की महिमा का बखान किया है। कबीर *राम नाम* की महिमा का बखान करते हुए कहते हैं सच तो यह है कि राम नाम के इस नशे की अनुभूति का वर्णन कर पाना उसी तरह असंभव है जैसे

गूंगा व्यक्ति वाणी के अभाव में गुड़ के स्वाद का वर्णन नहीं कर सकता है। गणिका और सदन कसाई जैसे पापी व्यक्ति भी राम नाम के स्मरण से संसार से तर गए। जिन-जिन लोगों ने इस राम नाम रुपी नशे का आस्वादन किया उन्होंने संसार से मुक्ति पा ली। ऐसा विलक्षण है राम नाम का यह नशा ---

"जो राम नाम अमल रस चाखा तर गई गनिका सदन कसाई।
कहै कबीर गूंगे गुड़ खाया बिन रसना का करै बड़ाई।।"(४)

रीतिकालीन कवि संत मगनीराम भी कबीर की भाँति राम नाम के गायक और नामोपासक भक्त हैं। इन्होंने भी नाम महिमा को अपने काव्य में सर्वाधिक महत्त्व दिया है। वे सतत नाम जप को महत्त्व देते हुए कहते हैं-

"नाराईन कहि बैठिये उठिये कहि के राम।
चलिये हरि-हरि-हरि जपत मगनीराम प्रनाम।।"(५)

स्पष्ट शब्दों में संत मगनीराम भी राम नाम के साधक हैं।

(२) आचरण की शुद्धता: कबीर की भक्ति भावना में सदाचरण पर बल दिया गया है। वे सदाचार को भक्ति का प्रमुख अंग स्वीकारते हैं। आचरण की शुद्धता के लिए व्यक्ति को संपूर्ण विकारों का परित्याग करना होगा। विकारों के जनक हैं -- कंचन और कामिनी। इनके त्याग से ही सदाचार का मार्ग प्रशस्त होता है। वे कहते हैं कि "नारी के कारण ही व्यक्ति भक्ति] मुक्ति एवं ज्ञान में प्रवेश नहीं कर पाता-

"नारि नसावै तिनी सुख जा नर पासै होय।
भगति मुकति निज ज्ञान में पैसि न सकई कोय।।"(६)

कबीर ने आचरण की शुद्धता के लिए कुसंग का त्याग करने एवं सत्संग करने पर बल दिया है। कबीर का मत है कि जब तक मन में
काम] क्रोध] मद] लोभ] मोह] ईर्ष्या] द्वेष आदि विकार भरे हैं तब तक हृदय में भगवान की भक्ति नहीं आ सकती। भक्ति मार्ग पर चलने वाले व्यक्ति को अहंकार एवं कपट का भी परित्याग करना पड़ता है। "मैं" का भाव ही अहंकार है *मैं* के समाप्त होने पर
ही *तू* अर्थात् परमात्मा की प्राप्ति हो जाती है ---

"जब मैं था तब हरि नहीं अब हरि है मैं नांहि।
सब अँधियारा मिटी गया दीपक देख्या मांहि।।"(७)

इसी प्रकार, रीतिकालीन कवि संत मगनीराम जी भी भक्ति भाव के कवि हैं। उनका मानना है कि मानव प्रेम में ईश्वर की कृपा होती है। कण-कण में समाया राम ही मानवतावादी दृष्टिकोण का प्रेरणाधार है। मगनीराम जी की भक्ति भावना कबीर की भाँति सार्वलौकिक] सार्वकालिक और सार्वभौमिक है। वह एक ओर अत्यंत सरल और सहज है तो दूसरी ओर माया से आवद्ध होने पर सर्वाधिक कठिन और कष्टसाध्य भी है। इसका मुख्य कारण कवि द्वय की भक्ति *भाव-प्रधान* है। संत मगनीराम की भक्ति में भी बाह्याडंबर और भौतिक विधानों को कोई स्थान नहीं दिया गया है। संत कवि की भक्ति सहज है। वे ऐसे मंदिर के पुजारी हैं जिसकी फर्स हरी-हरी घास] जिसकी दीवारें दसो दिशाएँ हैं] जिसकी छत नीले आसमान की छतरी है। यह साधना स्थल सभी मनुष्य के लिए खुला है। मगनीराम की भक्ति में एकाग्र मन] सतत साधना] मानसिक पूजा-अर्चना] मानसिक जाप और सत्संगति को विशेष महत्त्व दिया गया है। हृदय में प्रीति और मुख में राम नाम] आचरण में पवित्रता और परिवेश में सदैव संत-समागम(यही उनकी समस्त भक्ति भाव-साधना का सूत्र है ---

"प्रेमवारि की दृष्टि जो उमरि चलै तन ताल।
काई मैल सब जाई बहि निर्मल मगनीलाल।।"(८)

(३) प्रपत्ति भाव: प्रपत्ति का अर्थ है --- शरणागति एवं आत्मनिवेदन।
जहाँ कबीर भगवान को सर्वशक्ति मानकर उसकी शरण में जाकर अपनी रक्षा की प्रार्थना करते हैं ---

"कबीर तेरी शरणी आया] राखि लेहु भगवान।"९)

मृत्यु का भय भी ईश्वर की शरण में जाने पर ही छूट पाता है। ईश्वर की शरण में जाने पर भव-सागर का अथाह जल Hkh गोपद से बने गड्ढे में भरे जल की भाँति सुगमता से पार किया जा सकता है। यथा ---

"भौ सागर अथाह जल तामैं बोहित राम आधार।
कहै कबीर हम हरि सरन, तब गोपद खुर
विस्तार।।"(१०)

वहीं संत मगनीराम भगवान को सर्वशक्ति मानकर उसकी शरण में जाने की बात कहते हैं] और समस्त विश्व कल्याण की कामना करते हैं ---

"कल्पद्रुम हरि सरण तरु] जो-जो पहुँचे संत।"(११)

ईश्वर की शरण में जाकर ही धर्म-कर्म एवं सांसारिकता से मुक्ति का मार्ग प्रशस्त संभव हो सकता है ---

"भूलि जाई वपु धर्म-कर्म] भाव भक्ति मों जाहि।
मगनीराम हिसाब मों] सरन जाइये ताहि।।"(१२)

४) ईश्वर में विश्वास: कबीर को भगवान की सर्वशक्तिमत्ता में विश्वास है। श्रद्धा और विश्वास भक्ति के अनिवार्य तत्त्व हैं। कबीर को पूरा विश्वास है कि "परमात्मा पूर्ण समर्थ है। वह राई को पर्वत एवं पर्वत को राई करने की सामर्थ्य रखता है] यथा ---

"सांई सू सब होत है बन्दे थै कछु नांहि।
राई थे पर्वत करै, परबत राई मांहि।।"(१३)

कबीर यह स्वीकारते हैं, कि मानव परमात्मा की कृपा से कुछ कर सकने योग्य बनता है। कबीर को कबीर बनाने वाला भी वही है ---

"ना कछु किया न करि सक्या] ना करणैं जोग सरीर।
जे किछु किया सो हरि किया, ताथैं भया कबीर-
कबीर।।"

जहाँ कबीर का यह विश्वास उनकी भक्ति का एक प्रमुख अंग है] वहीं संत मगनीराम भगवान की सर्वशक्तिमत्ता में विश्वास करते हुए कहते हैं - श्रद्धा और विश्वास भक्ति के अनिवार्य तत्त्व हैं। "सच्चा भक्त विकार रहित होकर निंदा, प्रशंसा, मान,अपमान की भावना से परे होकर तृष्णा और अभिमान का परित्याग कर भगवान के चरणों में स्वयं को समर्पित करने के पश्चात् ही यह श्रद्धा और विश्वास प्राप्त कर पाता है ---

"जै जै जै जै जै सदा] विस्वासी हरि नाम।
विमुखन की जै नहीं सुना] अब लौ मगनीराम।।"(१४)

५) वैराग्य भावना: जो व्यक्ति ईश्वर की भक्ति चाहता है उसे संसार के प्रति विरक्त भाव अपने मन में जगाना आवश्यक है। वैराग्य का तात्पर्य संसार को छोड़कर जंगल में निवास करना नहीं है। संसार में रहते हुए भी मन में संतोष वृत्ति लाना] विषयभोगों के प्रति अनासक्त होना] आशा-तृष्णा से मुक्त होना ही वैराग्य है। जब भक्त भगवान की ओर उन्मुख हो जाता है तो सांसारिक विषयों के प्रति विरक्ति स्वत: जागृत हो जाती है। कबीर की मान्यता है कि "आशा और तृष्णा जन्म- जन्मांतर तक पीछा करती रहती है" ---

"माया मरी न मन मुआ मरि मरि जात सरीर।
आसा त्रिस्ना ना मरी, सो कहि गए दास कबीर।।"(१५)

जहाँ कबीर संसार के रिश्ते-नातों को क्षणभंगुर मानते हैं और इन सारे संबंधों को स्वार्थमय कहकर कबीर वैराग्य जगाने का प्रयास करते हैं ---

"काकी माता पिता कहु] काकों कौन पुरुष को जोई।
घट फूटै कोउ जात न पूछै, काढ़उ काढ़उ
होई।।"(१६)

वहीं संत मगनीराम ने वैराग्य को जीवन में अति महत्त्वपूर्ण माना है। वे कहते हैं] अभिमान और अज्ञान से मुक्त होकर ही इस संसार से विरक्त हुआ जा सकता है और अपने मानव जीवन को सफल बनाया जा सकता है ---

"अभिमानी अज्ञानी जो मुख सो मृत संसार।
मगनीराम न आस जेहि, साँस दूसरी बार।।"17

६) माधुर्य भाव की भक्ति: माधुर्य भाव की भक्ति को मधुरा भक्ति या प्रेमलक्षणा भक्ति कहा जाता है। भक्त स्वयं को जीवात्मा एवं भगवान को परमात्मा मानकर दाम्पत्य प्रेम की अभिव्यक्ति जहाँ करता है वहाँ मधुरा भक्ति मानी जाती है। जीवात्मा-परमात्मा के विरह का अनुभव करती हुई उससे मिलन की आकांक्षा करती है। "कबीर की आत्मा रुपी सुंदरी बार-बार *हरि* को अपना *प्रियतम* मानती हुई कहती है कि *हरि* के बिना मैं रह नहीं सकती-

"हरि मेरा पीव हरि मेरा पीव।
हरि बिन रहि न सकै मेरा जीव।।"(१८)

जहाँ कबीर ने आत्मा-परमात्मा के मिलन के आनंद का वर्णन विवाह के सांगरुपक द्वारा किया है --

"दुलहिनि गावहु मंगलचार।
मेरे घर आए हो राजा राम भरतार।।"(1९)

वहीं संत मगनीराम जी कहते हैं] बहुत दिनों के बाद प्रियतम के साथ मिलन संभव हुआ है। उनके आते ही मंदिर का सूनापन तथा अंधकार दूर हो गया। इसके

लिए आत्मा रुपी प्रिया ने कोई प्रयत्न नहीं किया। सारा सौभाग्य राम की कृपा से अपने-आप मिल गया ---

"सुरति निरंतर जब लगै] दरसन को अकुलाई।
करुणामय तब कृपा कै मगनीराम मिलाई।।"(२०)

७) दास्यभाव की भक्ति: तुलसी की भक्ति जिस प्रकार दास्यभाव की है] उसी प्रकार कबीर की भक्ति-भावना में भी दास्य-भाव दिखाई पड़ता है। वे प्रभु को स्वामी एवं स्वयं को *दास*] *सेवक* या *गुलाम* कहते हैं -

मैं गुलाम मोहि बेचि गोसाईं।
दास कबीर भजि सारंग पान, देहु अभय पद मांगौ दान।।(२१)

जहाँ कबीर निर्गुणमार्गी भक्त कवि होने के बावजूद उनमें दास्य-भाव की भक्ति दिखाई देती है]वहीं रीतिकालीन संत मगनीराम की भक्ति में भी दास्य-भाव के दर्शन होते हैं। वे दास्य-भाव को स्वीकार करते हुए कहते हैं --

"स्वप्न जानि संसार जो] मन जो रहै उदास।
सत्य उदासी जानु सो] मगनीराम दास।।"(२२)

८) नवधा भक्ति का स्वरूप: कवि द्वय के काव्य में नवधा भक्ति के तत्त्व –श्रवण, कीत्र्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, वंदन, दास्य, सख्य, आत्मनिवेदन भी उपलब्ध होते हैं।
भक्त अपने सर्वस्व का समर्पण प्रभु के प्रति करता हुआ कामनाहीन हो जाता है। उसे अपने लिए कोई आकांक्षा नहीं रहती। स्पष्ट है कि कवि द्वय के काव्य में नवधा भक्ति के तत्त्व प्रचुरता से उपलब्ध हैं।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि कविद्वय निश्चय ही उच्च कोटि के सच्चे संत भक्त हैं। वे भक्ति की महिमा गाते नहीं अघाते। भक्तिहीन जीवन को वे व्यर्थ बताते हुए कहते हैं कि ऐसा व्यक्ति बार बार जन्म लेकर संसार में आता.जाता रहता है। इसलिए, भगवान के प्रति सर्व-समर्पण की भावना को ही कवि द्वय ने विशेष मान एवं महत्त्व प्रदान किया है। अतः उनकी साखियों में निहित उपर्युक्त सभी रूपों एवं भावों में उनकी भक्ति-भावना का समन्वयात्मक सौष्ठव देखा और अनुभव किया जा सकता है एवं ईश्वर के प्रति अटूट श्रद्धा एवं विश्वास उनकी भक्ति.भावना का प्रमुख तत्त्व माना जा सकता है।

संदर्भ

1. महादेवी वर्मा, देशराज सिंह भाटी राम, साहित्य रत्न] अशोक प्रकाशन, नई सड़क] दिल्ली – ६] प्रथम संस्करण] १९६०ई०. पृष्ठ सं० - १४५
2. मगनीराम रचनावली] डॉ. अवधेश्वर अरुण] वीणा प्रकाशन] मुजफ्फरपुर] प्रथम संस्करण] जीवन-वृत्त] पृष्ठ सं - १४
3. वही
4. कबीर एक मूल्यांकन : डॉ. बलदेव वंशी] आधार प्रकाशन] द्वितीय संस्करण] २०११] पृष्ठ सं० - १६
5. मगनीराम रचनावली] डॉ. अवधेश्वर अरुण] वीणा प्रकाशन] मुजफ्फरपुर] प्रथम संस्करण, जीवन-वृत्त, पृष्ठ सं० - १४
6. कबीर दास की भक्तिभावना, जूनियर रिसर्च फैलोशिप एवं लेक्चररशिप राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा, हिन्दी(तृतीय पत्र), साहित्य भवन, सी-१७, साइट-सी, सिकन्दरा, औद्योगिक क्षेत्र, आगरा २८२००७ (उ०प्र०) पृष्ठ सं० - ११
7. वही
8. मगनीराम रचनावली, डॉ. अवधेश्वर अरुण, वीणा प्रकाशन, मुजफ्फरपुर, प्रथम संस्करण, २००३, जीवन-वृत्त, पृष्ठ सं० - १५
9. कबीर दास की भक्तिभावना, जूनियर रिसर्च फैलोशिप एवं लेक्चररशिप राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा, हिन्दी (तृतीय पत्र), साहित्य भवन, सी – १७, साइट – सी, सिकन्दरा औद्योगिक क्षेत्र, आगरा २८२००७, (उ०प्र०), पृष्ठ सं० - ११
10. वही
11. मगनीराम रचनावली, डॉ. अवधेश्वर अरुण, वीणा प्रकाशन, मुजफ्फरपुर, प्रथम संस्करण, २००३, साखी सं० – २५६, पृष्ठ सं० - १०५
12. वही, साखी सं० – २९२, पृष्ठ सं० - २५
13. कबीर दास की भक्ति भावना, जूनियर रिसर्च फैलोशिप एवं लेक्चररशिप राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा, हिन्दी (तृतीय पत्र), साहित्य भवन, सी – १७, साइट – सी, सिकन्दरा औद्योगिक क्षेत्र, आगरा २८२००७ (उ०प्र०), पृष्ठ सं० - ११
14. मगनीराम रचनावली, डॉ. अवधेश्वर अरुण, वीणा प्रकाशन, मुजफ्फरपुर, प्रथम संस्करण, २००३, साखी सं – १२४९, पृष्ठ सं० - १०५
15. कबीर की काव्य साधना, डॉ. कृष्णदेव शर्मा, अखिलेश प्रकाशन, २००४, पृष्ठ सं० - ४२

16. कबीर दास की भक्ति-भावना, जूनियर रिसर्च फैलोशिप एवं लेक्चररशिप राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा, हिन्दी (तृतीय पत्र), साहित्य भवन, सी-१७, साइट-सी, सिकन्दरा औद्योगिक क्षेत्र, आगरा २८२००७, (उ०प्र०), पृष्ठ सं० - १२
17. मगनीराम रचनावली, डॉ. अवधेश्वर अरुण, वीणा प्रकाशन, मुजफ्फरपुर, प्रथम संस्करण, २००३, साखी सं० – १२४५, पृष्ठ सं० - १०४
18. कबीर दास की भक्ति भावना, जूनियर रिसर्च फैलोशिप एवं लेक्चररशिप राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा, हिन्दी (तृतीय पत्र), साहित्य भवन, सी-१७, साइट-सी, सिकन्दरा औद्योगिक क्षेत्र, आगरा २८२००७, (उ०प्र०), पृष्ठ सं-१२
19. वही
20. मगनीराम रचनावली, डॉ. अवधेश्वर अरुण, वीणा प्रकाशन, मुजफ्फरपुर, प्रथम संस्करण, २००३, साखी सं०-६२८, पृष्ठ सं०-५३
21. कबीर दास की भक्ति भावना जूनियर रिसर्च फैलोशिप राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा हिन्दी (तृतीय पत्र), साहित्य भवन, सी-१७, साइट-सी, सिकन्दरा औद्योगिक क्षेत्र, आगरा २८२००७, (उ०प्र०) पृष्ठ सं० - ११
22. मगनीराम रचनावली, डॉ. अवधेश्वर अरुण, वीणा प्रकाशन, मुजफ्फरपुर, प्रथम संस्करण, २००३, साखी सं० – ४०४, पृष्ठ सं० - ३४